Indian J. Soc.& Pol. 04(02):2017:115-118 **ISSN 2348-0084(P)**
ISSN 2455-2127(O)

मानवाधिकार को तरसते कश्मीरी पंडित

आलोक तिवारी[1]
[1]प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान,गनपत सहाय पी0जी0 कालेज,सुलतानपुर (उ0प्र0) भारत

ABSTRACT

राष्ट्रीय एकता को सशक्त और स्थायी आधार प्रदान करने वाले ऐतिहासिक उत्सवों पर जहाँ सभी भारतीय अपने घरों में अपने परिवारों के साथ खुशियाँ मनाते हैं । वहीं हिन्दू समाज का एक वर्ग ऐसा भी है, जिसके घरों के आंगनों में, पिछले अनेक वर्षों से दीपावली का एक भी दीया नहीं जला, जिन्हें मात्र भारतीय अथवा हिन्दू होने के अपराध में घरों से उजाड दिया गया है । जिनके खेत–खलियानों, बाग–बगीचों, घरों और पूजा स्थलों पर विधर्मियों, आतंकवादियों और निरकुंश सत्ता के खास लोगों ने कब्जा कर लिया है । दीपावली तो क्या किसी भी हिन्दू पर्व पर, ये अभागे, परन्तु स्वाभिमानी हिन्दू अपने घरों में खुशियों के चंद लम्हें नहीं बिता सकते । यह वर्ग है, कश्मीर से विस्थापित होकर भारत के कोने–कोने में बिखर चुके, चार लाख से भी ज्यादा हिन्दुओं का । जिन्हे इनकी जातीय परम्परा के अनुसार, कश्मीरी पंडित कहा जाता है । ये कश्मीरी पंडित अपने ही देश में शरणार्थी की तरह जिन्दगी बिताने के लिए विवश कर दिये गये हैं ।[1] ऐसे समय में जबकि सम्पूर्ण विश्व में मानवाधिकारों को लेकर बहस छिड़ी हुई है कश्मीरी पंडितों के मानवाधिकारों पर कोई बात करने को तैयार नहीं है प्रस्तुत शोध पत्र में इसी दुर्दशा को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

***KEY WORDS :** मानवाधिकार, कश्मीरी पंडित, पलायन, कश्मीर, आतंकवाद*

1947, 1965 तथा 1971 इन तीनों प्रत्यक्ष युद्धों के पश्चात भी कश्मीर घाटी को जीत लेने का स्वप्न पूरा न होने से, पाकिस्तान समझ गया कि, प्रत्यक्ष रूप से इस क्षेत्र को हथियाना उसकी क्षमता में नहीं है । अतः छदम युद्ध द्वारा उसने इसे प्राप्त करने की योजना बनायी, इस योजना के अन्तर्गत प्रमुख रूप से कश्मीर घाटी में रह रहे मुसलमानों की इस्लामियत का फायदा उठाने के लिए इस्लाम के खतरे में होने का नारा बुलन्द किया । जिसको सुनते ही इस्लाम परस्त मुसलमान किसी भी प्रकार की हिंसक कार्यवाही, क्रूर कर्म तथा आत्म बलिदान के लिए तत्पर हो जाता है । यह सम्पूर्ण विश्व के इस्लाम समर्थकों की मानसिकता है । पाकिस्तान ने इसी मानसिकता का आहवान किया । परिणाम स्वरूप कश्मीर के घाटी के मुसलमान इस आवहन के प्रति आकृष्ट हुए । यह आहवान और उसे मिला जन–समर्थन ही कश्मीर में आतंकवाद का जनक है ।(वैद्य,2006 पृ075) अपने सम्प्रदाय के अलावा अन्य किसी भी सम्प्रदाय का मान्य न करना, उन पर अगणित अत्याचार करना, आतंक निर्माण कर उसमें भय और असुरक्षा की भावना पैदा करना, उनको इस्लाम स्वीकार करने के लिए बाध्य करना, इसके बाद भी इस्लाम मान्य नहीं किया, तो देश छोड़ देने के लिए विवश करना, यह विश्व भर के सारे इस्लाम अनुयायियों की नीति रही है । अवनर शेख नाम के एक मुस्लिम लेखक ने कहा है कि ''अत्याचारों की सहायता से धर्म फैलाने की रीति अरबों की है ।'' पर यह मीमांसा मान्य नहीं की जा सकती है । ईरान में अरब कहाँ थे ? फिर अपना धर्म बचाने के लिए पारसियों को क्यों भागकर जाना पड़ा ? जिन लोगों ने पारसियों को भगाया, वे आखिरकार ईरानी ही तो थे । बस फर्क केवल इतना ही था, कि उन्होनें इस्लाम ग्रहण कर लिया था और जिन्होने इस्लाम ग्रहण नहीं किया उन्हें देश छोड़ना पडा । अफगानिस्तान में भी यही हुआ, वहाँ एक भी बौद्ध नहीं रह पाया । जीवित बौद्ध की बात ही नहीं, पत्थर के मूर्तियों के गढे बुद्ध को भी नहीं बक्शा गया । महात्मा बुद्ध की एक भी पत्थर की मूर्ति बच नहीं पायी । अफगानिस्तान में मुसलमान बने लोग अरबी तो थे नहीं । इस ताण्डव को मध्य युगीन की बर्बरता भी नहीं कहा जा सकता । और तो और बीसवीं सदी में निर्मित पाकिस्तान ने भी हिन्दुओं को रहने नहीं दिया । पश्चिमी पाकिस्तान में उस समय 18 प्रतिशत हिन्दू थे । अब मुश्किल से 1 प्रतिशत हैं । कहाँ गये 17 प्रतिशत हिन्दू ? कुछ लोगों का कत्लेआम किया गया अन्यों को भयभीत किया गया । आतंक निर्माण कर अधिकाँश को मुसलमान बनाया गया और जो न माने उन्हें खदेह दिया गया । कश्मीर में भी यहीं हुआ ।(वही पृ0170–171) कश्मीर घाटी में रहने वाले मुसलमानों का एक वर्ग ऐसा है, जो प्रारम्भ से ही अपनी रियासत को पाकिस्तान में विलीनीकरण चाहता था, दूसरा बडा वर्ग स्वतंत्र कश्मीर का पक्षधर था । इन्हीं दोनों वर्गों को पाकिस्तान ने अपने स्वार्थ साधन का माध्यम बनाया । भ्रष्ट प्रशासन के कारण उत्पन्न बेरोजगारी, अव्यवस्था तथा अन्य प्रकार की समस्याओं के लिए भारत के काफिरों की सरकार को उत्तरदायी बताते हुए कश्मीरी नवयुवकों को बहकाने में

1:Corresponding Author

पाकिस्तान ने कोई कसर नहीं छोडी । सत्य या झूठ किसी भी बात की परवाह न करते हुए बडा रक्त रंजित प्रचार किया गया ।(वही पृ0 75–76) पाकिस्तान समर्थित सैकडों की संख्या में खुफिया ऐजेण्ट कश्मीर में बिखर गये, और भारत के खिलाफ विष वमन करने लगे । मजहब के नाम पर घाटी के युवकों को बहकाया जाने लगा । भारत माता के जयघोष की जगह, पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगने लगे, राष्ट्रीय ध्वजे का अपमान किया जाने लगा, विद्यालयों में भी भारत माता की जय का उच्चारण बंद हो गया, वे लोग धर्म परिवर्तन कराने में भी पीछे नहीं रहे जहाँ कहीं भी अवसर मिलता हिन्दू को मुसलमान बना दिया जाता था । इस प्रकार पाकिस्तान के खुफिया ऐजेन्ट कश्मीर के मुस्लिम समाज को मजहब के नाम पर भडकाने में, कामयाब रहे, उनके मन–मस्तिष्क में स्वतंत्र कश्मीर की भावना का विकास करके भारत विरोधी भावना भर दी गयी ।(जुगराज,2001 पृ058) वास्तव में पाकिस्तान ने योजना बद्ध ढंग से कश्मीर में अपने अड्डे स्थापित किये । ग्रामीण–नगरीय क्षेत्रों में इनकी टोलियाँ सक्रिय हो गई, दीवारों पर भारत विरोधी नारे एवं पत्रकों की भरमार हो गयी । हिन्दू विरोधी उत्तेजक भाषणों के टेप, चलचित्र गाँव–गाँव में सुनाए और दिखाए जाने लगे । कश्मीरी जंगलों, आबादी रहित सुदूरवर्ती क्षेत्रों में आतंकवादियों ने अपने आतंकी प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित कर लिये । इन अड्डों में पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सुडान, कश्मीर सहित आतंकी गतिविधियों के समर्थक आकर बस गये । इसके बाद आतंकवादियों ने हिंसात्मक घटनाओं के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना प्रारम्भ कर दिया ।(वही पृ068) कश्मीर घाटी में मजहवी आतंकवाद ने मुख्य रूप से हिन्दुओं को निशाना बनाया । हत्या, बलात्कार और अपहरण का ताण्डव नृत्य होने लगा । हिन्दू समाज के ऊपर दहशत की तलवार लटकायी गयी । हिन्दू जनसंख्या घाटी में न केवल अल्पसंख्यक थी । अपितु इस प्रकार बिखरी हुई थी, कि वह सामूहिक रूप से, इस आतंकवाद का मुकाबला करने में अपने आपको असमर्थ महसूस कर रही थी । मात्र पाँच–छः गाँव ही ऐसे थे, जहाँ हिन्दुओं के 60–70 घर इकट्ठा थे । गाँव–गाँव में हिन्दुओं को तंग–तबाह, अपमानित–प्रताडित करने और व्याभिचार की घटनायें सरेआम होने लगी । हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं, को कष्ट पहुँचाने के लिए उनके घरों के सामने गो मांस की दुकानें खोली गयी, अनेक देवी–देवताओं के मन्दिरों के पास गो हत्यायें होने लगी । 1990 आते–आते पूरी घाटी का वातारण हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान के विरूद्ध हो गया । हिन्दुओं के घरों के बाहर चेतावनी के परचें चपकने लगे । जिस पर लिखा रहता था, या तो सभी मुसलमान बन जाओं, पाकिस्तान जिन्दाबाद कहो, आजादी का नारा लगाओ, नहीं तो घाटी खाली कर दो, यहाँ से भाग जाओ।(वही पृ028–29) भारतीय ऐजेन्ट बने काफिरों की मौत ही सुनिश्चित है । मस्जिदों से, स्थानीय पत्र, पत्रिकाओं के माध्यम से भय पैदा करने वाली चेतावनियाँ दी जाती थी । बिना किसी गलती के आतंकवादी कश्मीरी हिन्दुओं की बेरहमी से हत्या कर रहे थे । वह भी पूरी क्रूरता के साथ । एक को मारकर हजारों को डराकर उन्हें पलायन करने पर मजबूर करना, उनका उद्देश्य था । इसी लिए आँखे नोच लेना, जीते की चमडी उधेड़ लेना, आम जगहों पर डाल देना, ताकि खून बह–बह कर तिल–तिल मरने पर मजबूर करना । शवों को हाथ लगाने से मना करना । कई दिनों तक पेड़ों से शवों को लटकाये रखना, शायद रिवाज सा बन गया था । हिन्दुओं को जबरजस्ती मुसलमान बनाये जाने लगा, उनकी लडकियों को मुस्लिम लडकों से ब्याह दी गयी। रात–दिन हिन्दुओं के घरों में पत्थर बरसने लगे । हिटलिस्ट में जो हिन्दू थे, आतंकवादी उनके घरों में जाते, वे कहीं भी छिपे रहते, उन्हें बाहर निकालकर, चाकूओं से गोदकर, लातों से मारकर, मुँह पर थूककर, उनके धर्म की गाली देकर, क्रूरता तरीके से उन्हें मार डालते थे । मृतक की पत्नी अगर कहती कि उसे भी मार डाला जाय तो कहते तू मर जायेगी तो इसके लिए कौन रोयेगा । पतियों के सामने पत्नियों का, पिताओं के सामने पुत्रियों का सामूहिक बलात्कार किया जाता । अफगानी आतंकवादी शेख जलालुद्दीन ने स्वयं स्वीकार किया है कि उसने 27 लड़कियों के साथ बलात्कार किया था ।(शास्त्री 2004 पृ0104–105)

हिन्दू अपनी प्राण रक्षा और युवा लडकियों की इज्जत बचाने के लिए रात के अन्धेरे में उन्हें शहर ले जाने लगे और सुबह चुपचाप जम्मू भेजने लगे । कई लडकियाँ जिन्हें आतंकवादी ढूँढ रहे थे । वे बुर्का पहनकर जम्मू पहुँची और अपनी इज्जत को बचाया । कश्मीर की सात्विक धरती पर आसुरी शक्तियों का राज्य हो गया । यहाँ की नदियों में अमृत की जगह रक्त बहने लगा । जिन वनों में हमारे ऋषि–मुनि निर्भय होकर तप करते थे । वे उग्रवादियों के लिए शरण स्थल बन गये । पुत्र के मरने पर पिता को अग्नि देने के लिए मना कर दिया गया । माँ के रोने पर भी प्रतिबन्ध लगाया गया । नारियों के दाम लगाये जाने लगे । हिन्दू समाज के सामने ऐसी विकट परिस्थितियों में दो ही मार्ग थे – या तो सब, मुसलमान बन जाय, कश्मीर की आजादी का नारा लगाये तथा अपने घरों की आबरू को जिहाद का नारा लगाने वालो के हवाले कर दें । या फिर दूसरा रास्ता यह था कि अपना, घर–बार, लाखों की धन–संपति को छोडकर, अपने आत्म सम्मान और धर्म की रक्षा के लिए घाटी से विस्थापित हो जायं । कश्मीर घाटी के अधिकाँश हिन्दुओं ने दूसरा मार्ग अपनाया परिणाम स्वरूप तीन लाख से ज्यादा हिन्दु अपने घर, जमीन–जायदाद, सरकारी नौकरियों या व्यापार छोडकर भागना पडा । उनके घरों तथा दुकानों को जला दिया गया । उनकी सम्पति लूट ली गई, तथा उनके मंदिरों को नष्ट कर दिया गया ।

जम्मू जैसे छोटे शहर में इस तरह के विस्थापितों के अधिक मात्रा में बसने के कारण काफी भीड हो गयी । सभी धर्मशालायें मंदिरों के आँगन, बस–अड्डे, जिसको जहाँ जगह

मिली वह वहीं पडा रहा । कश्मीर की ठण्डी वादियों में रहने को अभ्यस्त ये लोग जम्मू की गर्मी में सुलझने लगे । कई बुजुर्गों की इस गर्मी से मृत्यु हो गयी । केशर की क्यारियों में चहकने वाले बच्चों का बचपन छिन गया । तम्बुओं में साँप–बिच्छुओं के काटने से कुछ लोगों की मृत्यु हो गयी । दो–तीन पीढियों से जो संयुक्त परिवार में रहते थे, वे सब बिखर गये । जब बहू–बेटी को कपडे बदलने होते थे, तो पिता को तम्बू से बाहर रहना पडता था और जब पिता को कपडे बदलने होते तो बेटी–बहू को तम्बू से बाहर रहना पडता था । विस्थापित परिवार के विद्यार्थी शिक्षा के क्षेत्र में पिछड गये । जर–जमीन, बाग–बगीचें और रोजगार छूटने के कारण पूरा परिवार आर्थिक रूप से कमजोर हो गया ।(जुगराज,2001पृ030–31)

भारत के विभिन्न शहरों में बसे कश्मीरी पंडितों की दयनीय स्थिति रोंगटे खडी कर देती है । ये कश्मीरी पंडित अपने घरों में वापस जाना चाहते हैं । अगली शिवरात्रि अपने घरों में मनायेंगे, प्रत्येक वर्ष इस प्रकार का संकल्प करते–करते 25 वर्ष बीत गये हैं । इन 25 वर्षों में देश और प्रदेश की सरकारों ने 25 योजनायें बनायी होंगी, परन्तु राजनीति से प्रेरित इन योजनाओं का वहीं हाल हुआ, जो कश्मीरी पण्डितों का हुआ था । इस काल खण्ड में जम्मू कश्मीर की सत्ता पर काबिज हुए सभी मुख्यमंत्रियों डॉ0 फारूक अब्दुल्ला, उमर अब्दुल्ला (नेशनल कान्फ्रेंस) गुलाम नवी आजाद, (कांग्रेस) मुक्ती मो0 सईद, महबूबा सईद, (पीपुल्स डेमोक्रेटिव पार्टी) ने चिल्ला–चिल्ला कर कहा कि ''पण्डितों के बिना कश्मीर अधूरा है , इन्हें सम्मान पूर्वक वापस इनके घरों में लाया जायेगा.....'' किन्तु ये सभी घोषणाएँ हवाई साबित हुईं । विस्थापित पंडितों के नेता श्री ह्रदय नाथ गंजू पूँछते हैं कि सरकार यदि वास्तव में हमें कश्मीर में वापस भेजने के प्रति ईमानदार है तो शरणार्थी शिविरों को स्थायी रूप क्यों दिया जा रहा है ? कश्मीरी पंडितों द्वारा छोडें गये घरों और दुकानों पर भारत विरोधी तत्वों द्वारा कब्जे क्यों करने दिये गये ? हमारे पूजा स्थलों और जमीन–जायदाद को सार्वजनिक घोषित करके उस पर सरकारी इमारतें क्यों खडी की जा रही हैं ? हिन्दुओं के सामूहिक पलायन के कारण सरकारी नौकरियों से हुए रिक्त स्थानों को मुसलमान कश्मीरी युवकों से क्यों, भरा जा रहा है ? हमारे पुश्तैनी घरों के ताले किसने खोले हैं ? और उनमें कौन लोग रह रहे हैं ? कश्मीरी पंडितों के एक वयोबृद्ध 90 वर्षीय अमरनाथ वैष्णवी, कहते हैं कि ''जम्मू–कश्मीर की कोई भी सरकार विस्थापित पंडितों को कश्मीर में वापस नहीं लाना चाहती । कोई भी मुख्यमंत्री अलगावादियों से टकराव मोल नहीं लेना चाहता । सभी के सभी मजहबी जूनून के शिकार हैं । सबकी रंगो में इस्लामियत का कट्टरपन भरा हुआ है । ये सभी नेता पंडितों के घर वापसी का नाटक करके भारत सरकार से करोडों का धन ऐंठ रहे हैं । इनके जेहन में भी हिन्दू विरोध समाया हुआ है । सभी एक ही थाली के चट्टे–बट्टे हैं।'' आश्चर्य इस बात पर है कि कश्मीर घाटी में पंडितों को उनके घरों मे फिर से बसाने की सरकारी योजनाएँ पंडितों से सलाह मशविरा किये बिना ही बनती रहीं है । सर्वविदित है कि कश्मीर से बलपूर्वक निकाले गये लगभग चार लाख पंडित देश के अनेक स्थानों पर बिखर चुके हैं । करीब एक लाख लोग जम्मू एवं निकटवर्ती कस्बों में स्थापित शरणार्थी शिविरों अथवा किराए के घरों में ठहरे हुए हैं । लगभग एक लाख लोग दिल्ली तथा उसके आस–पास के क्षेत्रों में दिन काट रहें हैं । शेष पंडित परिवार चण्डीगढ, जालन्धर, अमृतसर, आगरा, फरीदाबाद, जयपुर, लखनऊ, वाराणसी, भोपाल, चेन्नई, मुम्बई और कोलकाता इत्यादि स्थानों पर रह रहे हैं । इस तरह दूर–दराज के शहरों में ठहरने वाले पंडित परिवारों को फिर से कश्मीर में बसाना टेढी खीर है । इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए बहुत विस्तृत, ठोस एवं व्यावहारिक कार्य योजना की जरूरत है । जिसे विस्थापित पंडितों के नेताओं के विश्वास में लेकर ही पूरा किया जा सकता है।(सहगल,2013पृ0133–134)

भारत सरकार, सेना, प्रत्येक राजनीतिक संगठन और समस्त जनता को ये समझ में आना चाहिए, कि कश्मीर में भारत को सुरक्षित रखने के लिए कश्मीरी हिन्दुओं का वहाँ बसना अति आवश्यक है । यदि समय बीतने के साथ ये कश्मीरी हिन्दू देश के भिन्न–भिन्न भागों ऐसे बिखरते चले गये तो कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाये रखने का आधार ही समाप्त हो जायेगा । इन लोगों के स्थान–स्थान पर बिखरने से इनकी पहचान पर तो खतरा मँडराएगा ही, धीरे–धीरे इनके मन में अपनी कश्मीर घाटी में जाने की उमंग, उत्साह और जरूरत भी समाप्त हो जायेगी । राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा प्रकट इस वास्तविक मन्तब्य को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता कि ''देश का जो भाग हिन्दू विहिन होगा, वह भारत से कट जायेगा'' ।(वही,पृ0136)

अतः अब समय है यह निर्णय लेने का कि सम्पूर्ण जम्मू कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और कश्मीरी पंडितों के बिना कश्मीर अधूरा है । जैसी घोषणाओं को व्यवहार में लाने के लिए देश और विदेश में भटक रहे कश्मीर के सभी हिन्दुओं को उनकी जन्मभूमि में बसाने की कानूनी प्रक्रिया तेज करके, राजनीतिक नाटकवाजी को समाप्त करके, कश्मीरी पंडितों को, सुरक्षा और सम्मान के साथ अपने घरों में भेजने का प्रथम और मुख्य प्रयास किया जाय । इनके कश्मीर में लौटने से इनकी पहचान और मनोबल दोनों बढेगा । जिस दिन सरकार ने इन देशभक्त पंडितों को कश्मीर में सुरक्षित बसाने का राष्ट्रीय महत्व का काम कर दिया । उसी दिन धर्म की अधर्म पर और सत्य की असत्य पर विजय होगी । विस्थापितों का वनवास समाप्त होगा । विजया दशमी, दशहरा व दीपावली जैसे उत्सव अपनी सार्थकता को प्राप्त होंगे तथा कश्पय ऋषि की पूर्ण भूमि अपना

मूल गौरव प्राप्त करेगी । इसी आशा एवं विश्वास के साथ ये लेख सुधी पाठकों के सुझाव एवं सत्य परामर्श हेतु सादर समर्पित है ।

सन्दर्भ

सहगल, नरेन्द्र (2013) *''ब्यथित जम्मू कश्मीर'* दिल्ली, सस्ता साहित्य प्रकाशन

वैद्य,माधव गोविन्द (2006) : *कश्मीर समस्या एवं समाधान* लखनऊ लोकहित प्रकाशन

जुगराज, रवीन्द्र (2001) *रक्तरंजित जम्मू कश्मीर* दिल्ली ज्ञान गंगा प्रकाशन

शास्त्री, एम0बी0आर0 (2004) कश्मीर गाथा, जयपुर, ग्रन्थ विकास